



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

दिन 5 जून 2023

दिनांक

23. 8. 23

पृष्ठ संख्या

4

कॉलम

3-6

हकृवि ने गाजर घास उन्मूलन अभियान चलाया

जागरण संवाददाता, हिसार : गाजर घास के प्रकोप से फसलों के उत्पादन में कमी आ रही है। साथ ही मनुष्य एलर्जी, एगिजमा, दमा व बुखार इत्यादि रोगों से ग्रस्त हो रहा है। इसलिए इस घास को फूल आने से पहले ही उखाड़कर नष्ट कर देना चाहिए। इसको ध्यान में रखते हुए चौधरी सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज के दिशानिर्देशानुसार वैज्ञानिक लगातार प्रदेश भर में गाजर घास के प्रति किसानों को जागरूक कर रहे हैं।

इसी कड़ी में विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञान विभाग, जबलपुर के खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के संयुक्त सहयोग से सभी कृषि विज्ञान केंद्रों की ओर से गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में अनुसंधान निदेशक डा. जीतराम शर्मा रहे।



हकृवि में आयोजित गाजर घास जागरूकता सप्ताह के दौरान बैनर के साथ मौजूद मुख्यातिथि डा. जीतराम शर्मा व अन्य। पीआरओ

साथ ही अखिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परियोजना हिसार केंद्र के मुख्य अन्वेषक डा. टोडरमल पुनिया भी उपस्थित रहे।

डा. जीतराम शर्मा ने कहा कि गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान का मुख्य उद्देश्य गाजर घास के दुष्प्रभावों के बारे में लोगों को जागरूक करना है। उन्होंने कहा कि मानसून शुरू होते ही गाजर के जैसी पत्तियों वाली एक घास बड़ी

तेजी से बढ़ने व फैलने लगती है, जिसे गाजर घास, कांग्रेस घास या चटक चांदनी आदि नाम से भी जाना जाता है। गाजर घास को नियंत्रण करने के लिए खेत के चारों तरफ गेंदे का पौधा लगाकर इसके फुटाव व वृद्धि को रोका जा सकता है।

डा. टोडरमल पुनिया ने बताया कि इस पौधे का प्रवेश हमारे देश में अमेरिका से आयात होने वाले गेहूं के साथ साल 1955 में हुआ था।

तीन से चार माह में यह पौधा अपना जीवन-चक्र पूरा कर लेता है। उन्होंने बताया अब यह पौधा संभवतः देश के हर हिस्से में मौजूद है और लगभग 35 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्रफल में फैल चुका है।

सस्य विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डा. संजय कुमार ठकराल ने कहा कि सामूहिक प्रयास से ही गाजर घास की समस्या को नियंत्रण किया जा सकता है, इसलिए हमें इस अभियान का हिस्सा बनकर अपने आसपास के क्षेत्र को गाजर घास मुक्त करने में सहयोग देना होगा। इस दौरान डा. वीरेंद्र सिंह हुड्डा, डा. सुरेंद्र कुमार शर्मा, डा. सुरेश, डा. प्रवीन कुमार, डा. उमा देवी, डा. आरएस दादरवाल, डा. सतपाल, डा. मूली देवी, डा. सुशील सिंह, डा. झाबरमल, डा. नीलम, डा. कविता, डा. पी कीर्ति, डा. निधि काम्बोज, डा. पारस काम्बोज, डा. एकता काम्बोज भी मौजूद रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उज्ज्वल समाचार	23. 8. 23	5	5-8

हकूवि ने गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया

विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने किसानों को गाजर घास से फसलों व स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों के बारे में बताया

हिसार, 22 अगस्त (विरेन्द्र वर्मा): गाजर घास के प्रकोप से फसलों के उत्पादन में कमी आ रही है, साथ ही मनुष्य एलर्जी, एंजिमा, दमा व बुखार इत्यादि रोगों से ग्रस्त हो रहा है। इसलिए इस घास को फूल आने से पहले ही उखाड़कर नष्ट कर देना चाहिए। इसको ध्यान में रखते हुए चौधरी सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के दिशानिर्देशानुसार वैज्ञानिक लगातार प्रदेश भर में गाजर घास के प्रति किसानों को जागरूक कर रहे हैं। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञान विभाग, खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के संयुक्त सहयोग से सभी कृषि विज्ञान केंद्रों की ओर से गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया गया। इसके अंतर्गत एक कार्यक्रम में मुख्यातिथि के रूप में अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा रहे। साथ ही अखिल भारतीय खरपतवार

अनुसंधान परियोजना हिसार केंद्र के मुख्य अन्वेषक डॉ. टोडरमल पूनियां भी उपस्थित रहे। मुख्यातिथि डॉ. जीतराम शर्मा ने संबोधित करते हुए कहा कि



हकूवि में आयोजित गाजर घास जागरूकता सप्ताह के दौरान बैनर के साथ मौजूद मुख्यातिथि डॉ. जीतराम शर्मा व अन्य।

गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान का मुख्य उद्देश्य गाजर घास के दुष्प्रभावों के बारे में लोगों को जागरूक करना है। उन्होंने कहा कि मानसून शुरू होते ही गाजर के जैसी पत्तियों वाली एक घास बड़ी तेजी से बढ़ने व फैलने लगती है, जिसे गाजर घास, काग्रेस घास या

चटक चांदनी आदि नाम से भी जाना जाता है। गाजर घास को नियंत्रण करने के लिए खेत के चारों तरफ गेंदे का पौधा लगाकर इसके फुटाव व वृद्धि को रोका

जा सकता है। अखिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परियोजना हिसार केंद्र के मुख्य अन्वेषक डॉ. टोडरमल पूनियां ने बताया कि इस पीधे का प्रवेश हमारे देश में अमेरिका से आयात होने वाले गेहूँ के साथ साल 1955 में हुआ था। तीन से चार माह में यह पौधा अपना

जीवन-चक्र पूरा कर लेता है। सस्य विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. संजय कुमार ठकराल ने उपस्थित वैज्ञानिकों व अनुसंधान क्षेत्र के सहायकों को प्रेरित करते हुए कहा कि सामूहिक प्रयास से ही गाजर घास की समस्या को नियंत्रण किया जा सकता है, इसलिए हमें इस अभियान का हिस्सा बनकर अपने आसपास के क्षेत्र को गाजर घास मुक्त करने में सहयोग देना होगा। कार्यक्रम में मंच संचालन डॉ. वीरेंद्र सिंह हुड्डा ने किया एवं गाजर घास को पहचाने और इसकी रोकथाम से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारी भी साझा की। इस अवसर पर डॉ. सुरेंद्र कुमार शर्मा, डॉ. सुरेश, डॉ. प्रवीन कुमार, डॉ. उमा देवी, डॉ. आर.एस. दादरवाल, डॉ. सतपाल, डॉ. मूली देवी, डॉ. सुरील सिंह, डॉ. झाबरमल, डॉ. नीलम, डॉ. कविता, डॉ. पी.कीर्ति, डॉ. निधि काम्बोज, डॉ. पास काम्बोज एवं डॉ. एकता काम्बोज भी मौजूद रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

हरिभूमि

दिनांक

23. 8. 23

पृष्ठ संख्या

10

कॉलम

6-8

किसानों को गाजर घास से फसलों व स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों के बारे किया जागरूक

■ हकूवि ने गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्नमूलन अभियान चलाया

हरिभूमि न्यूज >> हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञान विभाग, जबलपुर के खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के संयुक्त सहयोग से सभी कृषि विज्ञान केंद्रों की ओर से गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्नमूलन अभियान चलाया गया।

इसके अंतर्गत एक कार्यक्रम में मुख्यातिथि के रूप में अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा रहे। साथ ही अखिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परियोजना हिसार केंद्र के



हिसार। हकूवि में आयोजित गाजर घास जागरूकता सप्ताह के दौरान बैनर के साथ मौजूद मुख्यातिथि डॉ. जीतराम शर्मा व अन्य।

फोटो: हरिभूमि

मुख्य अन्वेषक डॉ. टोडरमल पुनिया भी उपस्थित रहे।

मुख्यातिथि डॉ. जीतराम शर्मा ने संबोधित करते हुए कहा कि गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्नमूलन अभियान का मुख्य उद्देश्य गाजर घास के दुष्प्रभावों के

बारे में लोगों को जागरूक करना है। उन्होंने कहा कि मानसून शुरू होते ही गाजर के जैसी पत्तियों वाली एक घास बड़ी तेजी से बढ़ने व फैलने लगती है, जिसे गाजर घास, कांग्रेस घास या चटक चांदनी आदि नाम से भी जाना जाता है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब मसरी	23-8-23	2	7

**हकूवि ने गाजर घास
जागरुकता सप्ताह व
उन्मूलन अभियान चलाया**

हिसार, 22 अगस्त (ब्यूरो): गाजर घास के प्रकोप से फसलों के उत्पादन में कमी आ रही है, साथ ही मनुष्य एलर्जी, एग्जिमा, दमा व बुखार इत्यादि रोगों से ग्रस्त हो रहा है। इसलिए इस घास को फूल आने से पहले ही उखाड़कर नष्ट कर देना चाहिए। इसको ध्यान में रखते हुए चौधरी सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के दिशा-निर्देशानुसार वैज्ञानिक लगातार प्रदेश भर में गाजर घास के प्रति किसानों को जागरुक कर रहे हैं।

इसी कड़ी में विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञान विभाग, जबलपुर के खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के संयुक्त सहयोग से सभी कृषि विज्ञान केंद्रों की ओर से गाजर घास जागरुकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया गया। इसके अंतर्गत एक कार्यक्रम में मुख्यातिथि के रूप में अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा रहे। साथ ही अखिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परियोजना हिसार केंद्र के मुख्य अन्वेषक डॉ. टोडरमल पूनिया भी उपस्थित रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समर उजाला	23-8-23	3	5-6

**गाजर घास के प्रति किसानों को
जागरूकता अभियान चलाया**

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में गाजर घास के प्रति किसानों को जागरूकता अभियान चलाया गया। विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञान विभाग, जबलपुर के खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के संयुक्त सहयोग से सभी कृषि विज्ञान केंद्रों की ओर से गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया गया। कार्यक्रम में मुख्यातिथि के रूप में अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा रहे।

अखिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परियोजना हिसार केंद्र के मुख्य अन्वेषक डॉ. टोडरमल पुनिया भी उपस्थित रहे। उन्होंने कहा कि मानसून शुरू होते ही गाजर के जैसी पत्तियों वाली एक घास बड़ी तेजी से बढ़ने व फैलने लगती है, जिसे गाजर घास, कांग्रेस घास आदि नाम से भी जाना जाता है। गाजर घास को नियंत्रण करने के लिए खेत के चारों तरफ गैदे के पौधे लगाकर इसके फुटाव व वृद्धि को रोका जा सकता है। संवाद



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी प्लस न्यूज	22.08.2023	--	--

हकृति ने गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया

वैज्ञानिकों ने किसानों को गाजर घास से फसलों व स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों की दी जानकारी

सिटी प्लस न्यूज, हिसार। गाजर घास के प्रकोप से फसलों के उत्पादन में कमी आ रही है, साथ ही मनुष्य एलर्जी, एरिजमा, दमा व बुखार इत्यादि रोगों से ग्रस्त हो रहा है। इसलिए इस घास को फूल आने से पहले ही उखाड़कर नष्ट कर देना चाहिए। इसको ध्यान में रखते हुए हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के वैज्ञानिक लगातार प्रदेश भर में गाजर घास के प्रति किसानों को जागरूक कर रहे हैं। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञान विभाग, जयपुर के खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के संयुक्त सहयोग से सभी कृषि विज्ञान केंद्रों की ओर से गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया गया। इसके अंतर्गत एक कार्यक्रम में मुख्यअतिथि के रूप में अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतगम शर्मा रहे। साथ ही अखिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परियोजना हिमाचल केंद्र के मुख्य अध्येक डॉ. टोडमल पुनिया भी उपस्थित रहे।

मुख्यअतिथि ने संबोधित करते हुए कहा कि गाजर घास जागरूकता



हकृति में आयोजित गाजर घास जागरूकता सप्ताह के दौरान केंद्र के साथ मौजूद मुख्यअतिथि डॉ. जीतगम शर्मा व अन्य।

सप्ताह व उन्मूलन अभियान का मुख्य उद्देश्य गाजर घास के दुष्प्रभावों के बारे में लोगों को जागरूक करना है। उन्होंने कहा कि मानसून शुरू होते ही गाजर के जैसी पत्तियों वाले एक घास बन्ने तेजी से बढ़ने व फैलने लगती है, जिसे गाजर घास, कप्रिम घास या चटक चांदनी आदि नाम से भी जाना जाता है। गाजर घास को नियंत्रण करने के लिए खेत के चारों तरफ मैदान का पीछा लगाकर इसके फुटाव व बर्छा को रोकना जा सकता है।

अखिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परियोजना हिमाचल केंद्र के मुख्य अध्येक डॉ. टोडमल पुनिया ने बताया कि इस पीधे का प्रवेश हमारे देश में अमेरिका से आयात होने वाले गेहूँ के साथ साल 1955 में हुआ था। तीन से चार माह में यह पीधा अपना जीवन-चक्र पूरा कर लेता है। उन्होंने बताया अब यह पीधा संभवतः देश के हर हिस्से में मौजूद है और लगभग 35 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्रफल में फैल चुका है। उन्होंने भी प्राकृतिक वनस्पतियों को खत्म होने

से बचाने और मानव स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए इसको नियंत्रित किए जाने पर बल दिया।

इस अवसर पर डॉ. संजय कुमार ठाकुरल, डॉ. वीरेंद्र सिंह हुड्डा, डॉ. सुरेंद्र कुमार शर्मा, डॉ. सुरेश, डॉ. श्रवीण कुमार, डॉ. आर देवी, डॉ. आरएस. दादरवाल, डॉ. सतपाल, डॉ. मूली देवी, डॉ. सुरेश सिंह, डॉ. शशरमल, डॉ. नीलम, डॉ. कविता, डॉ. पी.कीर्ति, डॉ. निधि काम्बोज, डॉ. पारस काम्बोज एवं डॉ. एकता काम्बोज भी मौजूद रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	22.08.2023	--	--

हकृषि के वैज्ञानिकों ने किसानों को गाजर घास के दुष्प्रभावों के बारे में किया जागरूक

पांच बजे न्यूज

हिसार। गाजर घास के प्रयोग में किसानों के उत्पादन में कमी आ रही है, साथ ही गन्तुय फलजी, एमिडिया, दमा व बुखार इत्यादि रोगों से झटते हो रहा है। इसलिए इस घास को फूल आने से पहले ही उपजाऊन नष्ट कर देना चाहिए। इसको ध्यान में रखते हुए चौधरी सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के वैज्ञानिक लगातार प्रदेश भर में गाजर घास के प्रति किसानों को जागरूक कर रहे हैं। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय के समय विज्ञान विभाग, जबलपुर के खरपलवार अनुसंधान निदेशालय के संयुक्त सहयोग से सभी कृषि विज्ञान केंद्रों की ओर से गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान चलाया गया। इसके अंतर्गत एक कार्यक्रम में मुख्यातिथि के रूप में अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा रहे। साथ ही अखिल भारतीय खरपलवार अनुसंधान परिषद के हिमाचल केंद्र के मुख्य अध्येक्षक डॉ. टोडरमल पुनिया भी उपस्थित रहे।



मुख्यातिथि डॉ. जीतराम शर्मा ने संबोधित करते हुए कहा कि गाजर घास जागरूकता सप्ताह व उन्मूलन अभियान का मुख्य उद्देश्य गाजर घास के दुष्प्रभावों के बारे में लोगों को जागरूक करना है। उन्होंने कहा कि मानसून शुरू होते ही गाजर के जैसी पत्तियों वाली एक घास बड़ी तेजी से बढ़ने

व फैलने लगती है, जिसे गाजर घास, कांजूस घास या चटक चांदनी आदि नाम से भी जाना जाता है। गाजर घास को नियंत्रण करने के लिए खेत के चारों तरफ गैट का पौधा लगाकर इसके पुटाने व बुट्टि को रोका जा सकता है। अखिल भारतीय खरपलवार अनुसंधान परिषद के हिमाचल केंद्र के मुख्य

और लगभग 35 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्रफल में फैल चुका है। जब यह शक एक स्थान पर जमा जाती है, तो अपने आस-पास किसी अन्य पौधे को जहने नहीं देती है जिसके कारण अनेकों महत्वपूर्ण जड़ी-बूटियों और चरागाहों के नष्ट हो जाने की सम्भावना पैदा हो गई है। उन्होंने भी प्राकृतिक वनस्पतियों

अध्येक्षक डॉ. टोडरमल पुनिया ने बताया कि इस पौधे का प्रवेश हमारे देश में अमेरिका से आयात होने वाले गेहूँ के साथ साल 1955 में हुआ था। तीन से चार महीने में यह पौधा अपना जीवन-चक्र पूरा कर लेता है। उन्होंने बताया अब यह पौधा संभवतः देश के हर हिस्से में मौजूद है

को खत्म होने से बचाने और मानव स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए इसके नियंत्रित करने पर बल दिया। समय विज्ञान विभाग विभागाध्यक्ष डॉ. संजय कुमार ठाकुराण उपस्थित वैज्ञानिकों व अनुसंधान क्षेत्र सहायकों को प्रेरित करते हुए कड़ा सामूहिक प्रयास से ही गाजर घास समस्या को नियंत्रण किया जा सकता इसलिए हमें इस अभियान का हिस्सा बनकर अपने आसपास के क्षेत्र को गंवासा मुक्त करने में सहयोग देना ही कार्यक्रम में मंच संचालन डॉ. वीरेंद्र सिंह ने किया एवं गाजर घास को पहचान और इसकी रोकथाम से जुड़े महत्वपूर्ण जानकारी भी साझा की।

इस अवसर पर डॉ. सुरेंद्र कुमार शर्मा, डॉ. सुरेश, डॉ. प्रवीण कुमार, डॉ. उमेश, डॉ. आर.एस. टोडरमल, डॉ. सतपाल, मूनी देवी, डॉ. सुशील सिंह, डॉ. इन्द्रावती, डॉ. नीलम, डॉ. कविता, डॉ. पी.कोविंद, निधि काम्बोज, डॉ. पारस काम्बोज एवं एकता काम्बोज भी मौजूद रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	22.08.2023	--	--

हकृवि ने गाजर घास जागरूकता समाह व उन्नमूलन अभियान चलाया

हिसार, 22 अगस्त (समस्त हरियाणा न्यूज)। गाजर घास के प्रयोग से किसानों के उत्पादन में कमी आ रही है, साथ ही मनुष्य एलर्जी, एडिमा, दवा व पुराना इन्फेक्टिवों से ग्रस्त हो रहा है। इसलिए इस घास को फूल आने से पहले ही उखाड़कर नष्ट कर देना चाहिए। इसको ध्यान में रखते हुए चौधरी सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रो. पी.अर. काम्बोज के दिशा-निर्देशानुसार वैज्ञानिक लगातार प्रदेश भर में गाजर घास के प्रति किसानों को जागरूक कर रहे हैं। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञान विभाग, उजवलपुर के खरपतवार अनुसंधान निदेशालय के संयुक्त सहयोग से सभी कृषि विज्ञान केंद्रों को और से गाजर घास जागरूकता समाह व उन्नमूलन अभियान चलाया गया। इसके अंतर्गत एक कार्यक्रम में मुख्यअतिथि के रूप में अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराज शर्मा रहे। साथ ही अखिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परिषदका हिसार केंद्र के मुख्य अध्येषक डॉ. रोडरपाल पुनिया भी उपस्थित रहे। मुख्यअतिथि डॉ. जीतराज शर्मा ने संबोधित करते हुए कहा कि गाजर घास जागरूकता समाह व उन्नमूलन अभियान का मुख्य उद्देश्य गाजर घास के दुष्प्रभावों के बारे में लोगों को जागरूक करना है। उन्होंने कहा कि मानवत रक्त होते ही गाजर के वैसी पत्तियों वाली एक घास बड़ी तेजी से बढ़ने व फैलने लगती है, जिसे गाजर घास, कहींस घास या चटक चांदी जदि नाम से भी जाना जाता है। गाजर घास को नियंत्रण करने के लिए खेत के चारों तरफ गैद का पौधा लगाकर इसके फूलों व फुट्टि को देका जा सकता है। अखिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परिषदका हिसार केंद्र के मुख्य अध्येषक डॉ. रोडरपाल पुनिया ने बताया कि इस पौधे का प्रवेश हमारे देश में अमेरिका से आयात होने वाले गेहूँ के साथ साल 1955 में हुआ था। तीन से चार घाट में यह पौधा अपना जीवन-चक्र पूरा कर लेता है। उन्होंने बताया अब यह पौधा संभवतः देश के हर हिस्से में मौजूद है और लगभग 35 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्रफल में फैल चुका है। जब यह रातक एक स्थान पर जग जाती है, तो अपने अण्ड-पास किसी अन्य पौधे को जगने नहीं देती है जिसके कारण अनेकों महत्वपूर्ण अन्धे-बुटियों और परतारों के जग हो जगों की सम्भावना पैदा हो गई है। उन्होंने भी प्राकृतिक वनस्पतियों को खत्म होने से बचाने और मानव स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए इसको नियंत्रित किए जाने पर बल दिया। सस्य विज्ञान विभाग के निभागाध्यक्ष डॉ. संजय कुमार ठाकुराल ने उपस्थित वैज्ञानिकों व अनुसंधान क्षेत्र के सहयोगियों को प्रेरित करते हुए कहा कि सामूहिक प्रयास से ही गाजर घास को खत्म करके नियंत्रण किया जा सकता है, इसलिए हमें इस अभियान का हिस्सा बनकर अपने आसपास के क्षेत्र को गाजर घास मुक्त करने में सहयोग देना होगा। कार्यक्रम में बीच संभालन डॉ. पीरिंद सिंह हुज्ज ने किया एवं गाजर घास को पहचाने और इसकी रोकथाम से जुड़े महत्वपूर्ण जानकारी भी सझा की। इस अवसर पर डॉ. सुरेंद्र कुमार शर्मा, डॉ. सुधीर, डॉ. प्रवीण कुमार, डॉ. उमा देवी, डॉ. आर.एस. दासगाल, डॉ. मलयाल, डॉ. मूली देवी, डॉ. सुशील सिंह, डॉ. ज्ञानमल, डॉ. नीलम, डॉ. कविता, डॉ. पी.वी.सि, डॉ. विधि काम्बोज, डॉ. शरत काम्बोज एवं डॉ. एकता काम्बोज भी मौजूद रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नम छोर न्यूज	22.08.2023	--	--

‘गाजर घास पौधे का प्रवेश भारत में अमेरिका से आयात होने वाले गेहूं के साथ साल 1955 में हुआ था’

नम-छोर न्यूज २२ अगस्त
हिसार। गाजर घास के प्रकोप से
फसलों के उत्पादन में कमी आ
रही है, साथ ही मनुष्य एलर्जी,
एन्जिमा, दमा व बुखार इत्यादि
रोगों से ग्रस्त हो रहा है। इसलिए
इस घास को फूल आने से पहले
ही उखाड़कर नष्ट कर देना
चाहिए। इसको ध्यान में रखते हुए
हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के
वैज्ञानिक लगातार प्रदेश भर में
गाजर घास के प्रति किसानों को
जागरूक कर रहे हैं। इसी कड़ी
में विश्वविद्यालय के सस्य
विज्ञान विभाग, जबलपुर के
खरपतवार अनुसंधान
निदेशालय के संयुक्त सहयोग
से सभी कृषि विज्ञान केंद्रों की
ओर से गाजर घास जागरूकता
सप्ताह व उन्नमूलन अभियान
चलाया गया। इसके अंतर्गत
एक कार्यक्रम में मुख्यातिथि के
रूप में अनुसंधान निदेशक डॉ.
जीतराम शर्मा रहे। साथ ही
अखिल भारतीय खरपतवार
अनुसंधान परियोजना हिसार
केंद्र के मुख्य अन्वेषक डॉ.

टोडरमल पूनिया भी उपस्थित
रहे। मुख्यातिथि डॉ. जीतराम
शर्मा ने कहा कि गाजर घास
जागरूकता सप्ताह व
उन्नमूलन अभियान का मुख्य
उद्देश्य गाजर घास के
दुष्प्रभावों के बारे में लोगों को
जागरूक करना है। उन्होंने
कहा कि मानसून शुरू होते ही
गाजर के जैसी पत्तियों वाली
एक घास बड़ी तेजी से बढ़ने व
फैलने लगती है, जिसे गाजर
घास, काग्रेस घास या चटक
चांदनी आदि नाम से भी जाना
जाता है। गाजर घास को
नियंत्रण करने के लिए खेत के
चारों तरफ गेंदे का पौधा
लगाकर इसके फुटाव व वृद्धि
को रोका जा सकता है। डॉ.
टोडरमल पूनिया ने बताया कि
इस पौधे का प्रवेश हमारे देश में
अमेरिका से आयात होने वाले
गेहूं के साथ साल 1955 में
हुआ था। तीन से चार माह में
यह पौधा अपना जीवन-चक्र
पूरा कर लेता है। उन्होंने बताया
अब यह पौधा संभवतः देश के

हर हिस्से में मौजूद है और
लगभग 35 मिलियन हेक्टेयर
क्षेत्रफल में फैल चुका है। जब
यह शाक एक स्थान पर जम
जाती है, तो अपने आस-पास
किसी अन्य पौधे को जमने नहीं
देती है जिसके कारण अनेकों
महत्वपूर्ण जड़ी-बूटियों और
चरागाहों के नष्ट हो जाने की
सम्भावना पैदा हो गई है।
उन्होंने भी प्राकृतिक
वनस्पतियों को खत्म होने से
बचाने और मानव स्वास्थ्य को
ध्यान में रखते हुए इसको
नियंत्रित किए जाने पर बल
दिया। सस्य विज्ञान विभाग के
विभागाध्यक्ष डॉ. संजय कुमार
ठकराल ने उपस्थित वैज्ञानिकों
व अनुसंधान क्षेत्र के सहायकों
को प्रेरित करते हुए कहा कि
सामूहिक प्रयास से ही गाजर
घास की समस्या को नियंत्रण
किया जा सकता है, इसलिए
हमें इस अभियान का हिस्सा
बनकर अपने आसपास के क्षेत्र
को गाजर घास मुक्त करने में
सहयोग देना होगा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	22.08.2023	--	--

उद्यमिता प्रोत्साहन सम्मेलन से विद्यार्थियों को मिली स्वावलंबन की नई दिशा



उद्यमियों को सम्मानित करते राज्यपाल बंडूक दत्तात्रेय

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। स्वावलंबी भारत अभियान के अंतर्गत विश्व उद्यमिता दिवस के अवसर पर उद्यमिता प्रोत्साहन सम्मेलन में 120 उद्यमियों व 18 शिक्षण संस्थानों के 2000 से अधिक विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। इस उद्यमिता सम्मेलन में शिरकात करने वाले विद्यार्थियों को स्वावलंबन की नई दिशा मिली है। स्वावलंबी

भारत अभियान के तहत युवाओं को आत्मनिर्भर व सशक्त बनाना ही मूल उद्देश्य है।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित उद्यमिता प्रोत्साहन सम्मेलन में मुख्यअतिथि राज्यपाल बंडूक दत्तात्रेय, अध्यक्ष हर्षवि के कुलकर्णी प्रो. बलदेव राज कांबोज, प्रेक्षक चक्रा टीपक शर्मा व भारत भूषण के प्रेरणादायी वक्तव्य से

विद्यार्थियों व उद्यमियों को काफी कुछ नया सीखने को मिला।

उद्यमिता प्रोत्साहन सम्मेलन की सफलता से उत्साहित स्वदेशी जागरण मंच के प्रांतीय प्रचार प्रमुख अंकल गोयल ने बताया कि इस सम्मेलन में श्रद्धा प्रशामन के साथ-साथ संजीव शर्मा, राम राकेश जांगड़ा, डॉ. अजीत, मोना जैन, ममल शर्मा, निर्मला बद्दल, भारत

सम्मेलन में उद्यमियों व 18 शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों ने लिया भाग

शर्मा, प्रदीप बामल, डॉ. सतीश व डॉ. अनजित सहारा विशेष रूप से उपस्थित रहे।

सम्मेलन में स्वदेशी जागरण मंच के राष्ट्रीय पदाधिकारी दीपक शर्मा ने कहा कि युवा उद्यमिता की तरफ बढ़ें। गोयल ने बताया कि राज्यपाल ने सभी उद्यमियों को संयुक्त रूप से सम्मानित भी किया।

इस समारोह में हिसार के गवर्नमेंट कॉलेज, जाट कॉलेज, डीएन कॉलेज, पोलिटेटेक्निक, गवर्नमेंट गर्ल्स कॉलेज, एफसी कॉलेज, कैम्पस स्कूल, विभिन्न गवर्नमेंट स्कूल, इंजीनियरिंग कॉलेज, ओडीएम कॉलेज, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय व गेजटार प्रशिक्षण केंद्र सहित कई शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठकपक्ष न्यूज	22.08.2023	--	--

उद्यमिता प्रोत्साहन सम्मेलन से विद्यार्थियों को मिली स्वावलंबन की नई दिशा

उद्यमिता प्रोत्साहन सम्मेलन में उद्यमियों व 18 शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों ने लिया हिस्सा



पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 22 अगस्त : स्वावलंबी भारत अभियान के अंतर्गत विश्व उद्यमिता दिवस के अवसर पर उद्यमिता प्रोत्साहन सम्मेलन में 120 उद्यमियों व 18 शिक्षण संस्थानों के 2000 से अधिक विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। इस उद्यमिता सम्मेलन में शिक्षक बनने वाले विद्यार्थियों को स्वावलंबन की नई दिशा मिली है। स्वावलंबी भारत अभियान के तहत युवाओं को आत्मनिर्भर व सशक्त बनाना ही मूल उद्देश्य है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित उद्यमिता प्रोत्साहन सम्मेलन में मुख्यअतिथि राज्यपाल बंशार दत्तग्रेव, अध्यक्ष हर्षद्वि के कुलपति प्रो. बलदेव राज कंबोज, प्रेस वक्ता दीपक शर्मा व भारत भूषण के प्रेरणादायी वक्तव्य से विद्यार्थियों व उद्यमियों को काफी झुंझ नया सीखने को मिला। उद्यमिता

प्रोत्साहन सम्मेलन की सफलता से सम्बन्धित स्वदेशी उत्पादन में वृद्धि प्रथम प्रमुख अतिथि अमिता गौयल ने बताया कि इस सम्मेलन में हर्षद्वि प्रशासन के अध्यक्ष-व्यव संचालक शर्मा, राम रमेशा जोगड़ा, डॉ. अजीत, मोना जैन, जयला शर्मा, निर्मला बालन, भारत शर्मा, प्रदीप बालन, डॉ. मनीषा व डॉ. बलजीत सहाराण विशेष रूप से उपस्थित रहे। सम्मेलन में स्वदेशी उत्पादन में वृद्धि पदाधिकारी दीपक शर्मा ने कहा कि युवा उद्यमिता की तरफ बढ़ें। उन्होंने कहा कि संगठित क्षेत्र व सरकारी मिलाकर कुल 3 करोड़ 80 लाख लोगों को ही रोजगार दे रहे हैं। देश की जनसंख्या 1.42 करोड़ है। इसका तात्पर्य यह है कि अन्य लोगों को असंगठित क्षेत्र ही रोजगार देना है। उन्होंने कहा कि दुनिया बदल रही है, इसलिए असंगठित क्षेत्र को बदलती दुनिया के अनुसार

संगठित होना पड़ेगा अन्यथा उनका व्यापार विदेशी कॉर्पोरेट के हाथ में चला जाएगा। उन्होंने स्वावलंबी भारत अभियान से अधिक से अधिक लोगों के जुड़ने की अपील भी की। दीपक शर्मा ने फर्ज से अर्थ पर पहुंचे विभिन्न उद्यमियों का उदाहरण देते हुए स्वावलंबन की तरफ कदम बढ़ाने का आह्वान किया। अमिता गौयल ने बताया कि राज्यपाल ने सभी उद्यमियों को संयुक्त रूप से सम्मनित भी किया। इस समारोह में हिस्सा के गवर्नमेंट कॉलेज, जार कॉलेज, डी एन कॉलेज, पोलिटेक्निक, गवर्नमेंट गर्ल्स कॉलेज, एक, सी. कॉलेज, कैपस स्कूल, विभिन्न गवर्नमेंट स्कूल, इंजीनियरिंग कॉलेज, ओडीएम कॉलेज, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय व रोजगार प्रशिक्षण केंद्र सहित कई शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।